(20)

अरूणोदय

अरूण प्राची और स्वर्णिम, नभ विलोको।
सहजमन की उर्मियाँ, इनको न रोको।।
तिमिर का अवसान करने में लगा है।
तुम प्रभाकर को न संशयग्रस्त टोको ।। 1 ।।

भले ही छद्मावरण इसने दिया है।
भले ही आवृत्त पापों को किया है।।
किन्तु तम का नही कोई चिर सखा है।
जाग जाओ नही कुछ भ्रम में रखा है।। 2 ।।

वेसुधी की नींद क्या, विश्रांति होती ।
निभृत हिंसा से कभी क्या क्रांति होती।।
इस तिमिर का बिंब जो मन पर पड़ा है।
वही नव उत्कर्ष में बाधक बड़ा है।। 3 ।।

कुछ उलूको को भले यह तमस भाता।
क्योंकि उनका प्रभा से होता न नाता।।
किंतु परिभाषा न उनकी मान्य होगी।
अंशु ही इस विश्व में सम्मान्य होगी।। 4 ।।

शिव कुमार मिश्र